इकाई 7 नारीवादी परिप्रेक्ष्य*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

7.2.1 समाजशास्त्र के संस्थापक और 'महिला प्रश्न'

7.3 उदारवादी नारीवाद

7.3.1 उदारवादी नारीवादियों का महिला उत्पीड़न पर विश्लेषण

7.3.1.1 मैरी वोलस्टोंनक्राफ्ट

7.3.1.2 हैरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल

7.3.2 नेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर वोमैन (एन ओ डब्ल्यू)

7.4 कट्टरपंथी नारीवाद

7.4.1 गेल रुबिन

7.4.2 केट मिलेट

7.4.3 शुलमिथ फायरस्टोन

7.4.4 एड्रिएन रिच

7.5 मार्क्सवादी नारीवाद

7.5.1 मार्क्सवादी नारीवादियों का महिला उत्पीड़न पर विश्लेषण

7.5.1.1 ऐन फोरमैन

7.5.1.2 एवलिन रीड

7.5.2 गृहकार्य पर मार्क्सवादी नारीवादी परिप्रेक्ष्य

7.6 समाजवादी नारीवाद

7.6.1 द्वि-प्रणालीय महिला उत्पीड़न की व्याख्या

7.6.1.1 जूलियट मिशेल

7.6.1.2 एलिसन जेग्गार

7.6.2 महिला उत्पीड़न की परस्पर संवादात्मक प्रणाली का स्पष्टीकरण

7.6.2.1 हेदी हार्टमैन

7.7 उत्तर आधुनिक और तीसरे चरण का नारीवाद

7.7.1 हेलेन सिक्सस

7.7.2 जूडिथ बटलर

7.8 बहुसांस्कृतिक और उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद

7.9 सारांश

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.11 संदर्भ

*यह इकाई चारू साहनी के द्वारा लिखी गई है।

7.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपः

- संगठित नारीवाद के उद्भव की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेंगे;
- उदारवादी, मार्क्सवादी, कट्टरपंथी, समाजवादी, उत्तराधुनिक और तीसरे चरण के नारीवाद जैसे नारीवादी दृष्टिकोण का वर्णन कर सकेंगे;
- महिलाओं के जीवन के मुद्दों को रेखांकित कर सकेंगे जिन पर विभिन्न नारीवादी परिप्रेक्ष्य केंद्रित हैं; तथा
- विभिन्न नारीवादियों के प्रमुख विचारों को उनके लेखन के माध्यम से समझ सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप नारीवाद की अवधारणा के बारे में और उदारवादी, मार्क्सवादी, कट्टरपंथी, समाजवादी और उत्तराधुनिक और तीसरे धारा के नारीवाद के रूप में विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों के बारे में भी अध्ययन करेंगे। इस इकाई में हम विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों और महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं के अनुरूप उनकी मान्यताओं के बारे में चर्चा करेंगे, जिन पर वे केंद्रित हैं। विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोण अलग-अलग मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और नारीवादियों का कभी भी संयुक्त स्वर नहीं रहा और समाज में बदलाव के अनुरूप मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया।

7.2 सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

नारीवाद अपने वर्तमान रूप में यूरोप और अमेरिका में उत्पन्न हुआ, लेकिन महिलाओं ने सदैव विरोध किया साथ ही साथ प्रभावी पितृसत्ता के प्रति असंतोष व्यक्त करने के लिए अपने स्वयं के मार्ग भी खोजे, चाहे वह ऐतिहासिक तौर पर किसी भी रूप से अस्तित्व में रहा हो। नारीवादी परिप्रेक्ष्य उन परिप्रेक्ष्यों को संदर्भित करता है, जो एक दृष्टिकोण से या फिर किसी अन्य दृष्टिकोण से आलोचना करते हैं, सवाल करते हैं और प्रभावी पुरुष परिप्रेक्ष्यों के विरुद्ध विकल्प तलाशते हैं जो कि उससे सहसम्बद्ध है जिसे स्त्रीवादीयों द्वारा सार्वभौमिक पितृसत्ता कहा जाता है। नारीवाद एक अखंड दृष्टिकोण नहीं है और महिलाओं की अधीनता को समझने और महिलाओं को मुक्त करने, उन्हें न्याय और समानता प्रदान करने के कई तरीके हैं। संगठित नारीवाद इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस में 17वीं शताब्दी के बाद से उभरा। औद्योगिक पूंजीवाद के आने और परिवार के भीतर आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया। "नारीवाद" मूल रूप से एक फ्रांसीसी शब्द था जो संयुक्त राज्य अमेरिका में बीसवीं सदी की शुरुआत में प्रचलन में आया (जेग्गार 1983: 5)। इसका उपयोग पहली बार महिलाओं के एक समूह को संदर्भित करने के लिए किया गया जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों को उन्नत किया और उन्हें स्वच्छन्दतावादी नारीवादियों के रूप में उल्लेखित किया क्योंकि वे व्यापक रूप से स्त्री लिंग की और उनके मातृत्व के पद की विशिष्टता से संबद्ध थीं। दूसरी ओर लैंगिक बुद्धिवादियों ने महिलाओं के लिए एक बेहतर स्थिति की मांग की क्योंकि उन्होंने महिलाओं को पुरुषों के बराबर माना और पुरुषों द्वारा महिलाओं पर शासन को समाप्त करने की परिकल्पना की।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में जे.एस. मिल और सिसली हैमिल्टन जैसे लेखकों ने अपने लेखनों में जेंडर संबंधी विचारों को शामिल किया लेकिन उन्हें मुख्यधारा

के समाजशास्त्र में जगह नहीं मिली। निम्नलिखित खंड में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि क्या समाजशास्त्र के संस्थापक पिताओं ने उन्नीसवीं शताब्दी में अपने लेखन में लैंगिक संबंधी विचारों को शामिल किया था।

7.2.1 समाजशास्त्र के संस्थापक और 'महिला प्रश्न'

इस खंड में हम कार्ल मार्क्स और एंजेल्स, मैक्स वेबर, एमिली दुर्खीम और जॉर्ज सिमेल जैसे प्रारंभिक समाजशास्त्रीय लेखकों के विषय में अन्वेशण करेंगे और इस बात का विश्लेषण करेंगे कि क्या उनके काम ने आधुनिक नारीवादियों के लेखन को प्रभावित किया। अधिकांश नारीवादियों का मानना है कि समाजशास्त्र के 'संस्थापक' ऐसे पुरुष थे जिन्होंने अपने लेखन में लैंगिक के मुद्दों पर थोड़ा ध्यान दिया या लिंग संबंधी विचारों को शामिल किया, जो उन्नीसवीं सदी के औद्योगिक पूंजीवादी समाज में सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने का प्रयास करते थे (जैक्सन एंड स्कॉट में 2002: 2 सेडमैन 1997)।

कार्ल मार्क्स पूंजीवादी समाज में मज़दूरों और पूँजीपतियों को पुरुषों के रूप में देखते थे न कि स्त्रियों के रूप में। श्रमिक षक्ति के पुनरुत्पादक के रूप में भी महिलाएं मार्क्स के लेखन में शामिल नहीं हैं। दूसरी ओर एंजेल्स (1884) ने 'द ओरिजिन ऑफ फैमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड द स्टेट' में महिलाओं की अधीनता का कारण बताया। एंगेल्स का मानना था कि प्रागैतिहासिक काल में महिला और पुरुष समान थे। एंगेल्स का कहना है कि प्रागैतिहासिक समाजों ने स्त्री वंश-रेखा (मात्र-अधिकार) के माध्यम से वंश का दावा किया करते थे और स्त्रियों की सार्वभौमिक ऐतिहासिक हार निजी संपत्ति के विकास और एकविवाही परिवार के उद्भव के साथ हुई। पुरुष अब निजी तौर पर संग्रहित की गई वस्तुओं और सम्पत्ती को पुरुष वंश-रेखा के माध्यम से अपनी संतानों को दे सकते हैं। आलोचकों ने एंगेल के दृष्टिकोण पर सवाल उठाये और इस बात की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह बहस का एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कि क्या इतिहास के किसी भी काल में महिलाओं के पास अधिकार था। हालाँकि, मार्क्स और एंगेल्स ने बाद के मार्क्सवादी नारीवादियों को प्रभावित किया, जिन्होंने महिलाओं की अधीनता की आर्थिक जड़ों को खोजा और साथ ही महिलाओं को श्रम के पुनरुत्पादक के रूप में महत्व दिया। वेबर ने प्राचीन परिवारों की पितृसत्तात्मक संरचना का जिक्र करते हुए सामाजिक रूप से वैध षक्ति के सबसे पुराने रूप में 'पितृसत्ता' को परिभाशित किया। वेबर के काम ने रॉबर्टा हैमिल्टन जैसे नारीवादी लेखकों को भी प्रभावित किया। एमिली दुर्खीम का विचार था कि समाज में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं को श्रम और विशेषज्ञता की वृद्धि के साथ लगातार बढ़ते क्रम में विभेदित किया गया। समाज के अध्ययन के लिए उनके कार्यात्मक अभिविन्यास में निहित है कि महिलाओं का स्थान घरेलू क्षेत्र में था और विवाहित रिष्ते में महिलाओं का एक प्रभावषाली कार्य था जो उन पुरुषों की भूमिका का पूरक था जिनके पास एक बौद्धिक कार्य था। (जैक्सन एंड स्कॉट 2002: 2-5)।

जॉर्ज सिम्मेल ने वेबर और दुर्खीम के इस दृष्टिकोण को सराहा जिसमें उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर को प्राकृतिक माना। उन्होंने कहा कि पुरुष सार्वजनिक क्षेत्र और महिलाएं निजी या घरेलू क्षेत्र के लिए उन्मुख थीं और इस धारणा ने पुरुषत्व/पौरुष और स्त्रीत्व की सदृष्य कल्पना को अग्रसर किया। हालाँकि, वे इस तथ्य के विषय में आलोचनीय थे क्योंकि पौरुष का अलिंगी के रूप में भी प्रतिनिधित्व किया जा सकता है, जबकि मानक रूप में नारीत्व इससे विचलन था (जैक्सन और स्कॉट 2002)। इसलिए प्राचीन कालिक समाजशास्त्रियों ने अपने लेखन में लैंगिक संबंधी विचारों को शामिल नहीं किया, हालांकि उनके कुछ लेखनों ने बाद के नारीवादियों के विचारों को प्रभावित किया। हम निम्नलिखित अनुभाग में विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों को शामिल करेंगे।

7.3 उदारवादी नारीवाद

इंग्लैंड में सत्रहवीं सदी के मध्य में औद्योगिक पूंजीवाद के आने के साथ ही महिलाओं को आश्चर्य हुआ कि नया समतावाद उनके लिए लागू क्यों नहीं हुआ (जेग्गार 1983: 27)। उदारवादी नारीवादियों का मानना है कि सभी मनुष्य बुद्धिसंपन्न कारक हैं और महिलाओं की अधीनता कुछ पारंपरिक मान्यताओं और कुछ कार्यों को करने में महिलाओं की अक्षमता की धारणा के आधार पर कानूनी बाधाओं के कारण है। जबकि पुरुषों को उनकी क्षमताओं के आधार पर आंका जाता है, कभी-कभी महिलाओं की क्षमताओं को उनके लिंग के कारण भी सीमित माना जाता है (जेग्गार 1983: 176)। उदारवादी नारीवादियों का तर्क है कि पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार होना चाहिए और राज्य को ऐसे सुधार लाने चाहिए ताकि महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर मिलें। उन्नीसवीं शताब्दी में उदारवादी नारीवादियों ने महिलाओं के संपत्ति के अधिकार के लिए आवाज़ उठाई और अमेरिका में एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन जैसे महिला-मताधिकारवादियों ने महिलाओं को मत देने के अधिकार के लिए संघर्ष किया, जो अंततः 1920 में महिलाओं को प्रदान किया गया। बीसवीं शताब्दी में उन्होंने उन कानूनों के खिलाफ संघर्ष किया जो महिलाओं के विपरीत पुरुषों को अधिक अधिकार देता था।

7.3.1 उदारवादी नारीवादियों का महिला उत्पीड़न पर विश्लेषण

7.3.1.1 मैरी वोलस्टोंनक्राफ्ट

उदारवादी नारीवादी मैरी वूलस्टोनक्राफ्ट (1759-1799) ने जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक 'सब्जेक्शन ऑफ़ वोमैन' में 'विंडिकेशन ऑफ़ दा राइट ऑफ़ वोमैन' नामक के लेख लिखा। उन्होंने उन महिलाओं के मुद्दों को संबोधित किया जिन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद की आंधी के कारण अपनी सामाजिक स्थिति में गिरावट का अनुभव किया। उन्होंने कहा कि लड़कियों को लड़कों के समान शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपनी तर्कसंगत क्षमताओं को विकसित कर सकें। कुछ आधुनिक दार्शनिकों (जेग्गार 1983: 35) जैसे ह्यूम, रूसो, कांट और हेगेल को संदेह था कि क्या महिलाएं पूरी तरह से तर्कसंगत थीं। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने तर्क दिया कि महिलाएं पुरुषों की तरह ही सक्षम और तर्कसंगत थीं। उन्होंने कहा कि महिलाएं पूरी तरह से अपनी योग्यता का एहसास नहीं कर सकती थीं क्योंकि उन्हें शिक्षा से वंचित और घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित रखा जाता था। उनके लिए महिलाओं की आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है लेकिन महिलाओं की अधीनता को समाप्त करने के लिए अंतिम उपाय नहीं है। उन्होंने दावा किया कि एक महिला को मन और शरीर से मजबूत होना चाहिए, एक पूरी तरह से तर्कसंगत मानस जो आत्मनिर्धारण के लिए सक्षम है (टोंग 1983: 15)।

7.3.1.2 हैरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल

उन्नीसवीं शताब्दी में उदारवादी नारीवादियों के रूप में हैरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल ने 1832 में 'अर्ली एस्सेज़ ऑन मैरिज एन्ड डिवोर्स' नाम की पुस्तक का सह-लेखन किया। 1851 में हेरिएट टेलर ने 'एन्फ्रान्चिस्मेंट ऑफ़ वोमैन' और 1869 में मिल ने 'सब्जेक्षन ऑफ़ वोमैन' लिखी। ये निबंध काफी हद तक विवाह और तलाक जैसे मुद्दों पर केंद्रित थे। मिसाल के तौर पर हैरियट टेलर ने महिलाओं को कुछ ही बच्चे पैदा करने के लिए आगाह किया क्योंकि उन्हें लगा कि तलाक की स्थिति में महिलाओं को उन्हें अकेले पाले का दायित्व उठाना पड़ेगा। दूसरी ओर जॉन स्टुअर्ट मिल का मानना था कि तलाकशुदा पुरुषों और

महिलाओं दोनों को ही बच्चों के जीवन में कुछ भूमिकाएं निभानी होती हैं। हेरिएट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा कि लैंगिक न्याय लाने के लिए महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा के अलावा राजनीतिक और आर्थिक अवसर भी उपलब्ध होने चाहिए। हैरियट टेलर ने कहा कि पत्नी तभी पति के समकक्ष हो सकती है जब वह घर से बाहर काम करके परिवार में आर्थिक रूप से योगदान दे लेकिन इसके लिए महिलाओं को घरेलू कामकाज और बच्चे के पालन-पोषण के लिए नौकरों की फौज की जरूरत होगी। उदारवादी नारीवादियों जैसे मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट और हैरियट टेलर की महिलाओं के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के मुद्दों को संबोधित करने के लिए आलोचना की जाती है।

टेलर और मिल दोनों ने महिलाओं के मताधिकार प्राप्त करने की दिशा में काम किया और माना कि यह मताधिकार ही है जो व्यक्तियों को सामाजिक व्यवस्था को बदलने की शक्ति देता है। जे.एस. मिल ने महिलाओं को मताधिकार दिलाने की दिशा में कार्य करना प्रारंभ किया क्योंकि उनका मानना था कि केवल तभी महिलाएं व्यक्तिगत परिवारों की बजाय बड़े समाज की भलाई की दिशा में कार्य कर सकेंगी। हालांकि उनका मानना था कि सही मायने में स्वतंत्र हुई महिलाओं का झुकाव परिवार और बच्चे के पालन-पोषण की ओर ज्यादा होगा।

7.3.2 नेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर वोमैन (एन ओ डब्ल्यू)

बीसवीं शताब्दी में अन्य विद्रोही उदारवादी नारीवादियों ने दावा किया कि मताधिकार के अलावा महिलाओं को आर्थिक अवसरों, यौन स्वतंत्रता और नागरिक स्वाधीनता की भी आवश्यकता है। 1960 में महिलाओं के मुक्ति आंदोलन के उदय के साथ ही कई नारीवादी दृष्टिकोण रहे जिन्होंने महिलाओं की अधीनता की व्याख्या की और इसने नारीवाद को भी मज़बूत किया। इस प्रकार 1960 के दशक में नेशनल आर्गेनाइजेषन फॉर वोमैन (एन ओ डब्लू) का गठन किया गया जो तर्क देता है कि लैंगिक न्याय तभी प्राप्त किया जा सकता है जब पुरुषों और महिलाओं के बीच संसाधनों का समान वितरण हो (टोंग 2009: 2)। बेट्टी फ्राइडन जिन्होंने 'द फेमिनिन मिस्टिक' लिखी थी, को 1966 में एन ओ डब्लू की पहली अध्यक्षा चुना गया। बेट्टी फ्राइडन ने लिखा कि किस प्रकार लड़कियों और लड़कों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता है और कैसे जन्म के समय से ही 'लिंग आधारित कार्य' का अस्तित्व है। फ्राइडन ने बड़े पैमाने पर अमेरिकी उपनगरों की श्वेत मध्यम वर्गीय शिक्षित महिलाओं के मुद्दों को संबोधित किया, जिन्होंने मां और पत्नी की परंपरागत नैत्यकवादीय भूमिकाओं को असंतोशजनक पाया। फ्राइडन ने माना कि सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं के एकीकरण से पुरुषों और बच्चों को गृहकार्य में कुछ भागीदारी निभाने के लिए प्ररित करेगा। उन्होंने कहा कि महिलाएं यदि केवल एक माँ और पत्नी होने के अलावा भी विचार करें तो वे एक "पूर्ण मानव व्यक्तित्व" भी हो सकतीं है, और वह कार्यबल में भी समन्वित हो सकती है (टोंग 2009: 31)। हालांकि, फ्राइडन की आलोचना उस जटिलता को न देखपाने के लिए की जाती है जिसका सामना महिलाएं समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाए बिना परिवार और कामकाजी जीवन के बीच सामंजस्य बैठाने के प्रयास में करती है।

उदारवादी नारीवादी निजी क्षेत्र में राज्य का हस्तक्षेप कम चाहते हैं, लेकिन उनका मानना है कि संपत्ति के अधिकार की गारंटी, मतदान के अधिकार और बोलने की स्वतंत्रता जैसे मामलों में सार्वजनिक क्षेत्र में राज्य का हस्तक्षेप होना चाहिए। दूसरी ओर समकालीन उदारवादी नारीवादी, विशेष रूप से कल्याणकारी उदारवादी, अर्थव्यवस्था में विशेष रूप से उन परिवारों को जिनमें आश्रित सदस्य हैं को कानूनी सहायता प्रदान करने या कम लागत में आवास प्रदान करने के लिए सरकार के हस्तक्षेप का आह्वान करते हैं। उदारवादी

नारीवादियों का मानना है कि उभयलिंगिता एक आदर्श है जो मनुष्य को अपनी पूरी मानव क्षमता विकसित करने की अनुमति देता है। एक उभयलिंगि समाज वह होगा जिसमें पुरुष और महिला शारीरिक रूप से पुरुष और महिला तो होंगे लेकिन वे अत्यंत पुरुष और स्त्री गुणों को नहीं दिखाएंगे जो पारंपरिक रूप से पुरुषों और महिलाओं में होते हैं। यदि पुरुषों और महिलाओं को अपनी क्षमता विकसित करने के समान अवसर दिए जाएंगे तो उन्हें पुरुषों के साथ जुड़े तर्कसंगतता, स्वावलम्बी, आक्रामक, साहसी, असंवेदनशील और भावनाओं की अभिव्यक्ति से विमुख और महिलाओं के साथ जुड़े सहज, निर्भर, दयालु और भावनात्मक जैसे पारंपरिक मनोवैज्ञानिक लक्षणों के रूप में परिभाशित नहीं किया जायेगा।

बोध प्रश्न 1

1) उदारवादी नारीवाद के अनुसार महिलाओं की अधीनता का आधार स्पष्ट करें।

2) निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरें :

   क) मैरी वोल्स्टोनक्राफ्ट ने कहा कि महिलाएं अपनी क्षमता का एहसास नहीं कर सकती थीं क्योंकि वे घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित थीं और उन्हें ..... से वंचित रखा जाता था।

   ख) हैरियट टेलर और जॉन स्टुअर्ट मिल दोनों ने महिलाओं के ..... के लिए काम किया।

   ग) बेट्टी फ्राइडन ने ..... किताब लिखी।

7.4 कट्टरपंथी नारीवाद

1960 के दशक के उत्तरार्ध में महिलाओं की समस्याओं को व्यक्तिगत विफलता के संकेत के रूप में ना देखकर, अपितु एक प्रणाली की एक ऐसी शाखा के रूप में देखा गया जिसमें पुरुष वर्ग दमनकारी वर्ग था और महिला वर्ग पीड़ित वर्ग। उदारवादी नारीवादियों के विपरीत, 1960 और 1970 के दशक के कुछ नारीवादि व्यवस्था में सुधार नहीं करना चाहते थे, बल्कि वे इसे एक क्रांतिकारी रूप देना चाहते थे और व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति को खोजना चाहते थे। इन नारीवादियों ने रेड स्टॉकिंग्स, दा फेमिनिस्ट और न्यू यॉर्क रेडिकल फेमिनिस्ट जैसे समूहों का गठन किया। ये क्रांतिकारी नारीवादी जागरूकता में वृद्धि लाने में विश्वास करते थे। कट्टरपंथी नारीवादियों का मानना है कि महिलाओं के उत्पीड़न का मूल कारण शारीरिक प्रक्रिया विज्ञान और इतरलिंगी आकर्षण है और यह एक पति और पत्नी से निर्मित एक परिवार के मूल में निहित है। वे इतरलैंगिक कृत्य को वर्चस्व और पितृसत्ता के कृत्य के रूप में वर्णित करते हैं जो की एक बहुत ही व्यक्तिगत मामला रहा है, जैसा कि उनके नारे से स्पष्ट है 'व्यक्तिगत राजनीतिक है'। कट्टरपंथी नारीवादियों ने घोषित किया कि सभी महिलाएं बहनें हैं (टोंग 2009: 49) क्योंकि इतरलैंगिकता मानव उत्पीड़न का प्रमुख रूप है।

कट्टरपंथी नारीवाद के अनुसार लैंगिक निर्माण पुरुष वर्चस्व की एक विस्तृत प्रणाली को दर्शाता है और इसे समाप्त होना चाहिए (जेग्गार 1983: 85)।

जोरीन फ्रीमैन उभयलिंगी महिलाओं को बढ़ावा देने वाले प्रथम व्यक्तियों में से एक थी। इन कट्टरपंथी नारीवादियों का मानना था कि एक महिला जैविक विज्ञान के अनुसार एक स्त्री के रूप में पैदा होती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसे केवल स्त्रियोचित गुणों को ही प्रदर्शित करना है। वह पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों गुणों को धारण कर सकती है। अन्य कट्टरपंथी नारीवादियों ने इस दृष्टिकोण का विरोध किया और कहा कि महिलाओं को

कठोरता से स्त्रियोचित व्यवहार का पालन करना चाहिए और स्त्रीत्व गुणों से युक्त एक स्त्री होने की श्रेष्ठता का प्रदर्शन करना चाहिए।

मैरी डेली जैसे कट्टरपंथी नारीवादियों ने उभयलिंगी समाज की धारणा की आलोचना की। वह मानती हैं कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों में उनकी अपनी खूबियां और ख़ामियां होती हैं। पुरुषों और महिलाओं को अपने व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना समाज में लैंगिक रूढ़ियों के अस्तित्व को बनाए रखना है। कट्टरपंथी नारीवादियों को लिंगवाद की प्रकृति एवम कार्य और इसे दो समूहों में समाप्त करने के तरीके पर विभाजित किया गया है। कट्टरपंथी नारीवाद की भी विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं, भले ही सभी कट्टरपंथी नारीवादी लिंग, लैंगिक और प्रजनन पर मुख्य रूप से केंद्रित रहते हैं।

7.4.1 कट्टरपंथी नारीवादियों का महिला उत्पीड़न पर विश्लेषण

7.4.1.1 गेल रुबिन

कट्टरपंथी नारीवादी गेल रुबिन के अनुसार, पितृसत्तात्मक समाज में लिंग/लैंगिक प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसमें समाज व्यक्तियों की जैविकता के तथ्यों का उपयोग उनकी लैंगिक पहचान और पुरुषों और महिलाओं के कुछ विशेष गुणों को निर्दिश्ट करने के लिए करता है। सामाजिक रूप से निर्धारित लैंगिक पहचान को प्राकृतिक और सामान्य माना जाता है (टोंग 2009: 51)।

7.4.1.2 केट मिलेट

लैंगिक राजनीति (1970) में मिलेट का मानना कि यदि महिलाओं को मुक्त कराना है तो पुरुष नियंत्रण को समाप्त करना होगा क्योंकि पुरुष नियंत्रण पितृसत्ता को बनाए रखता है। केट मिलेट ने कहा कि लिंग/जेंडर प्रणाली महिलाओं के उत्पीड़न का मूल स्रोत है और नारीवाद को इस प्रणाली के उन्मूलन की दिशा में काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पितृसत्ता पुरुषों और महिलाओं के लिए कुछ भिन्न-भिन्न भूमिकाओं का प्रचार करती है ताकि पुरुषों को सक्रिय और प्रभावषाली रूप में देखा जाए और महिलाओं को निश्क्रिय और अधीनस्थ के रूप में देखा जाए, जैसा कि लिंग आधारित कार्यों के उद्घष्त है। यह पितृसत्तात्मक विचारधारा चर्च, परिवार और राज्य के माध्यम से फैलती है जो पुरुषों के द्वारा महिलाओं की अधीनता का समर्थन करती है। उन्होंने एक उभयलिंगी भविश्य के लिए कार्य किया जिसमें वांछित पुरुष और महिला लक्षण सह-अस्तित्व में थे (टोंग 2009: 54)।

7.4.1.3 शुलमिथ फायरस्टोन

कट्टरपंथी नारीवादियों का एक स्थायी प्रभाव कार्यों के माध्यम से भी है जैसे शुलमिथ फायरस्टोन द्वारा 'द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स'। उनकी पुस्तक के शुरुआती शब्द हैं, 'लिंग वर्ग इतना गहरा है कि अदृष्य समान हो जाता है' (जेग्गार 1983: 85)। लिंग के आधार पर लैंगिक विभेद हमारे जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त हैं लेकिन हम उन्हें पहचान नहीं पाते हैं। उन्होंने दर्शाया कि कैसे मातृत्व की पितृसत्तात्मक संस्था भविष्य की माताओं और पिताओं को जन्म देती है। शुलमिथ फायरस्टोन ने लड़कियों में नारीत्व और लड़कों में पुरुषत्व के उद्भव के फ्रायडियन विचारों को संषोधित किया जैसा कि जीव विज्ञान में निहित है। वह मानती हैं कि लड़कियों में स्त्रीत्व और लड़कों में पुरुषत्व को पुरुष प्रधान समाज में माताओं की तुलना में पिता की सत्ता को अधिक बड़ा स्वीकारे जाने के कारण समझाया जा सकता है। फ्रायड के ओडिपल कॉम्प्लेक्स के सिद्धांत की आलोचना करते हुए

उनका तर्क है कि लड़के और लड़कियां दोनों ही अपनी माताओं के प्रति आकर्षित होते हैं जो उनकी प्रारंभिक देखभाल करती हैं। जीवन में बाल्यावस्था गुज़र जाने के बाद लड़के और लड़कियां अपने पिता के प्रति आकर्षित होते हैं जिन्हें सार्वजनिक संसार में बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए देखा जाता है। लड़के पिता के अनुकरण के द्वारा उनके करीब रहने का प्रयास करते हैं और लड़कियां अपने स्त्रियोचित व्यवहार के द्वारा उन्हें प्रसन्न करती हैं और उनके करीब रहने का प्रयास करतीं हैं (जेग्गार 1983: 258)।

7.4.1.4 एड्रिएन रिच

"ऑफ़ वूमेन बोर्न" में, एड्रिएन रिच ने कहा है कि पुरुष इस बात से अवगत है कि पितृसत्ता का अस्तित्व तब तक नहीं रह सकता जब तक कि पुरुष संसार में जीवन लाने या न लाने की महिलाओं की शक्ति को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होते (टोंग: 200: 79)। रिच ने कहा कि पुरुष चिकित्सकों ने महिला दाइयों का स्थान लेकर जन्म दिलाने की प्रक्रिया पर नियंत्रण कर लिया। पुरुषों ने आहार, विश्राम और गर्भावस्था के दौरान शिशुओं के बारे में नियमों पर तानाशाही की हैं और इसने महिलाओं को भ्रमित किया क्योंकि यह उनके स्वयं के अंतर्ज्ञान के साथ मतभेद था। उन्होंने कहा कि महिलाओं को प्रसव प्रक्रिया को निर्देषित करने में सक्षम होना चाहिए और पुरुष चिकित्सकों द्वारा निर्देशित होने की बजाय सुख और पीड़ा का अनुभव करना चाहिए। पितृसत्ता ने महिलाओं के लिए मातृत्व के अनुभव के हस्तांतरण को अग्रसर किया है। रिच फायरस्टोन से सहमत थे कि महिलाओं को मुक्त किया जाना चाहिए और पितृसत्ता के तहत जैविक मातृत्व को संस्थागत रूप देना बंद कर देना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

क) उदार नारीवाद और कट्टरपंथी नारीवाद के बीच भेद।

.....

.....

.....

.....

ख) शुलमिथ फायरस्टोन द्वारा महिलाओं की अधीनता के केंद्रीय तर्क की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

7.5 मार्क्सवादी नारीवाद

कट्टरपंथी नारीवादी जिनका मानना हैं कि विषम लैंगिकता महिलाओं के उत्पीड़न का स्रोत है वहीं इन के विपरीत, मार्क्सवादी नारीवादियों का मानना है कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न का कारण है। मार्क्सवादी नारीवादी मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन और अन्य उन्नीसवीं सदी के विचारकों के कार्यों से प्रभावित हैं। वे वर्ग आधारित समाज को महिलाओं के उत्पीड़न के स्रोत के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि यह निजी संपत्ति के व्यवहार की उत्पत्ति है जिसने पूर्व-औद्योगिक काल के समाजों में पुरुषों और महिलाओं के बीच

समतावादी संबंध को तोड़ दिया है। उत्पादन कुछ व्यक्तियों के हाथों में था जो पुरुष थे (टोंग 2009: 4)। मार्क्सवादी और समाजवादी नारीवादी इस मुद्दे से चिंताशील हैं कि क्या वास्तव में महिलाएं एक वर्ग का गठन कर सकतीं है। जबकि सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग की महिलाएँ अलग-अलग वर्गों से संबंध रखतीं हैं, लेकिन वे एकीकरणीय संघर्ष में साँझा रूप से शामिल हो सकतीं हैं जैसे 1970 के दशक का गृहकार्य के लिए मजदूरी आन्दोलन।

7.5.1 मार्क्सवादी नारीवादीयों का महिला उत्पीड़न पर विश्लेषण

7.5.1.1 ऐन फोरमैन

एन फोरमैन जैसे मार्क्सवादी नारीवादी मानते हैं कि एक महिला का स्वयं के प्रति दृष्टिकोण उसके परिवार की और उसके दोस्तों की उसके लिए की गई सराहना पर निर्भर है। अतः एक महिला खुद से ही विमुख हो जाती है। इसके अलावा वह गृहकार्य में भी संलग्न है जो सांसारिक, नियमित और विमुखीय है क्योंकि इसे उत्पादक के रूप में नहीं देखा जाता है। वह मानती हैं कि श्रमिकों के एक वर्ग के रूप में महिलाएँ केवल तभी मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं जब गृहकार्य को उत्पादक कार्य माना जाये। मार्क्सवादी नारीवादी एक ऐसे संसार की रचना करना चाहते हैं जिसमें महिलाएं स्वयं को खंडित अनुभव करने की बजाय एकीकृत मनुष्यों के रूप में देखें जो दूसरों की सराहना के आधार पर विमुख हैं (टोंग 2009: 102)।

7.5.1.2 एवलिन रीड

अपने कार्य, 'वूमेनः कास्ट, क्लास ओर ओप्रेस्ड सेक्स?' में एवलिन रीड ने तर्क दिया है कि पूंजीवादी और आर्थिक ताकतों के सामाजिक संबंध एक लिंग पर दूसरे लिंग के उत्पीड़न को लायें। रीड ने कहा कि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि पूँजीवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन होती हैं लेकिन तथ्य यह है कि पूंजीपति क्रम में बुर्जुआ महिलाएँ भी सर्वहारा पुरुषों और स्त्रियों पर प्रभुत्व रखतीं हैं। पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजी ही शक्ति है। वह उत्पीड़ित पुरुषों और महिलाओं को अपने सामान्य उत्पीड़कों के खिलाफ एक वर्गीय युद्ध छेड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। वह मानती हैं कि सर्वहारा महिलाओं का प्राथमिक शत्रु पितृसत्ता नहीं अपितु पूंजीवाद है। पूंजीवाद के उन्मूलन के साथ ही पुरुषों और महिलाओं का संबंध अधिक समतावादी होगा (टोंग 2009: 107)।

7.5.2 गृहकार्य पर मार्क्सवादी नारीवादी परिप्रेक्ष्य

1917 में रूस में कम्युनिस्ट क्रांति के बाद, सोवियत महिलाओं के लिए समय अच्छा नहीं गुज़रा जो निम्न स्थिति, कम मजदूरी जैसे थका देने वाले मुद्दों तक ही सीमित थीं। मार्गरेट बेन्सटन जैसे कुछ मार्क्सवादी नारीवादियों ने गृहकार्य पर अपना ध्यान केंद्रित किया और महिलाओं को एक वर्ग के रूप में देखा जो साधारण 'उपयोग मूल्यों' का उत्पादन करतीं हैं (टोंग 2009: 108)। उन्होंने कहा कि खाना पकाने, सफाई करने और बच्चों की देखभाल करने जैसे घरेलू कार्यों का सामाजीकरण किया जाना चाहिए ताकि महिलाओं को उत्पादक कार्य बल में शामिल किया जा सके और वे अपने घरों के बाहर भी समान 'कार्य ढाँचे' में संलग्न रह सकें जिस पर उनका नियंत्रण हो और उसे महत्वपूर्ण माना जाए। दूसरी ओर मारिया डेला कोस्टा और सेल्मा जेम्स ने तर्क दिया कि महिलाओं के लिए एक विकल्प यह भी हो सकता है कि वे घर पर ही रहें और घर में उनके द्वारा घर पर किए गए उत्पादक काम के लिए मजदूरी की माँग करनी होगी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को उनके पति के

नियोक्ताओं से मजदूरी मिलनी चाहिए उस ग्रहकार्य के लिए जो वे करती हैं। हालांकि, 1970 के दशक में कई मार्क्सवादी नारीवादियों को इस बात का यकीन नहीं था कि गृहकार्य के लिए मजदूरी महिलाओं को मुक्त कर सकती है। उन्होंने आलोचना की कि महिलाएं घरों तक ही सीमित रहेंगी, न कि घर के बाहर किसी भी काम में एकीकृत होंगी अपितु नियमित दोहराए जाने वाले काम में संलग्न रहेंगी।

बोध प्रश्न 3

क) मार्क्सवादी नारीवादीयों द्वारा दिए गए गृहकार्य पर विचारों को रेखांकित करें।

.....

.....

.....

.....

ख) निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरें:

1) एन फोरमैन के अनुसार महिलाएं केवल तभी मुक्त हो सकतीं है जब गृहकार्य को ..... मान्यता दी जाए।

2) मार्क्सवादी और समाजवादी नारीवादीयों का मानना है कि ..... पूर्व-औद्योगिक काल के समाजों में पुरुषों और महिलाओं के बीच समतावादी संबंध को तोड़ दिया है।

3) ..... महिलाएं पूंजीवादी समाज में सर्वहारा पुरुष और महिलाओं पर प्रभुत्व रखतीं है।

7.6 समाजवादी नारीवाद

एक और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य जिसने लिंग जेंडर के भेद को चुनौती दी वह समाजवादी नारीवाद था जिसने पुरुषों और महिलाओं के बीच भेद के जैविक आधार पर सवाल उठाया। मार्क्सवादी नारीवादीयों के विपरीत समाजवादी नारीवादीयों का मानना है कि वर्ग-विरोध अपने आप में महिलाओं के उत्पीड़न का कारण नहीं है, अपितु वर्ग-विरोध को 'एक संघ से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक का मुफ्त विकास सभी के मुक्त विकास की शर्त है' (टोंग 2009: 96)। उनका मानना है कि महिलाओं के उत्पीड़न को समझने के लिए न केवल वर्ग अपितु लिंग, नस्ल और जातीयता महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं। उनके लिए महिलाओं का लिंग वर्ग और आर्थिक वर्ग ही महिलाओं के उत्पीड़न का आधार है। समाजवादी नारीवादी कट्टरपंथी नारीवादियों से इस बात से सहमत हैं कि पितृसत्ता महिलाओं के उत्पीड़न का स्रोत है और मार्क्सवादी नारीवादीयों के साथ भी सहमत हैं कि पूंजीवाद महिलाओं के उत्पीड़न का स्रोत है। महिलाओं के उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए समाजवादी नारीवादीयों का मानना है कि पूँजीवादी पितृसत्ता या पितृसत्तात्मक पूँजीवाद के दोमुंही जानवर को मारा जाना चाहिए। इसलिए समाजवादी नारीवादीयों ने सिद्धांतो को विकसित किया जो पितृसत्ता और पूंजीवाद के बीच संबंधों को स्पष्ट करना चाहते हैं (टोंग 2009: 111)।

महिलाओं के उत्पीड़न को लाने में पितृसत्ता और पूंजीवाद ने कैसे एक साथ काम किया यह देखने के लिए, इस सिद्धांतों के दो सेट हैं (1) महिलाओं के उत्पीड़न की द्वि-प्रणाली स्पष्टीकरण और (2) महिलाओं के उत्पीड़न की परस्पर संवादात्मक-प्रणाली स्पष्टीकरण।

7.6.1 द्वि-प्रणालीय महिला उत्पीड़न की व्याख्या

7.6.1.1 जूलियट मिशेल

एक मार्क्सवादी एकल-करणीय स्पष्टीकरण के बजाय जो समाज में महिलाओं की स्थिति को पूंजीवादी समाज में उत्पादन में उनकी भूमिका के अनुसार निर्धारित करती है, जूलियट मिषेल ने अपनी किताब 'द वूमेंस एस्टेट' में इस बात को कहा कि समाज में महिलाओं की स्थिति उत्पादन, बच्चों के प्रजनन, लैंगिकता और बच्चों के समाजीकरण में उनकी भूमिका से निर्धारित होती है। हालांकि मार्क्सवादी उत्पादन में महिलाओं के प्रवेश का और परिवार के अंत का प्रचार करते हैं, लेकिन प्रजनन, बच्चों के सामाजीकरण और लैंगिकता के क्षेत्र में नीतियों की भी आवश्यकता है जो कि उतनी ही प्राथमिक हैं जितनी की आर्थिक मांगों। महिलाओं की स्वतंत्रता केवल तभी प्राप्त की जा सकती है जब उन व्यक्तियों के मानस और मानसिकता में बदलाव आयें जो महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मूल्यवान मानते हैं (टोंग 2009: 112)।

7.6.1.2 एलिसन जेग्गार

एलिसन जेग्गार ने माना कि पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने से महिलाओं को स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, अपितु केवल पितृसत्ता की समाप्ति से मिलेगी। महिलाएं अपने शरीर से ही विसंबंधित होतीं है क्योंकि वे शारीरिक रूप से खुद को समाज को खुश करने के लिए परिभाषित करती हैं और यहां तक कि उनके शरीर को पुरुष के ताकने और यौन उत्पीड़न जैसे कृत्यों के कारण यथोचित मान लिया जाता है। महिलाओं को उनके स्वयं से विसंबंधित कर दिया जाता है। महिलाओं को उनके बच्चों से भी अलग कर दिया जाता है। बच्चे अक्सर उनके जीवन में घटित अनुचित बातों के लिए माताओं को दोषी मानते हैं। तो जिस तरह श्रमिकों को उनके श्रम के उत्पादों से अलग कर दिया जाता है और केवल मशीन के एक उपांग के रूप में देखा जाता है उसी तरह महिलाओं को पितृसत्तात्मक व्यवस्था के भीतर 'महिलाओं' के रूप में अलग-थलग कर दिया जाता है क्योंकि इसे बच्चों के लालन-पालन प्रथाओं और महिलाओं के प्रजनन विकल्पों के नियमों के संबंध में एक ऐसे अध्यादेश के रूप में जारी किया जाता है जिसे उन पुरुषों द्वारा तय किया जाता है जो इन मामलों का संचालन करते हैं।

7.6.2 महिला उत्पीड़न की परस्पर संवादात्मक प्रणाली का स्पष्टीकरण

महिलाओं के उत्पीड़न की द्वि-प्रणाली की व्याख्या के विपरीत, महिलाओं के उत्पीड़न की संवादात्मक प्रणाली का स्पष्टीकरण यह बताता है कि किस प्रकार पितृसत्ता और पूंजीवाद महिलाओं पर अत्याचार करने के लिए एक-दूसरे के साथ सहसंबंध में कार्य करते हैं। आईरिश मैरियन यंग ने तर्क दिया कि वर्ग विश्लेषण स्वयं (जैसा कि षास्त्रीय मार्क्सवादियों में ऐसा होगा) महिलाओं की अधीनता की व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि यह 'लैंगिक अंधेपन' का करण है और केवल 'श्रम का लिंग विभाजन' महिलाओं की अधीनता को समझाने के लिए वर्ग विश्लेषण की जगह ले सकता है। इसी तरह सिल्विया वाल्बी का भी मानना है कि पितृसत्ता और पूंजीवाद एक दूसरे के साथ महिलाओं पर अत्याचार करने के लिए सहसंबंध में कार्य करते हैं (टोंग 2009: 116)।

7.6.2.1 हेदी हार्टमैन

हेदी हार्टमैन का मानना है कि पितृसत्ता और पूंजीवाद, पूंजीवादी पितृसत्ता नामक एक ही जानवर के दो शीष हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में पूंजीवाद के सर्वहारा वर्ग की उन महिलाओं

को जो गृहणियां उत्पादक श्रम शक्ति का उत्पादन करने के लिए कार्य करतीं थीं को घर में ही रहने के लिए प्रेरित किया जाता था या बाद में कार्यबल में उनका शोषण किया जाता था क्योंकि वे कम वेतन प्राप्त करतीं थीं। श्रम के वर्ग और लिंग विभाजन के कारण महिलाओं की जीवन यापन के साधनों तक सीधी पहुँच नहीं थीं। महिलाएं मजदूरी पाने वालों विशेषकर वयस्क पुरुषों पर निर्भर थीं। कामकाजी महिलाओं को घरेलू काम में भी उनके पतियों की मदद नहीं मिलती थी। इस प्रकार श्रम का लिंग विभाजन महिलाओं को वंचित करता है।

बोध प्रश्न 4

क) निम्नलिखित का मिलान करें :

1) उदारवादी नारीवाद	1) पूंजीवाद महिलाओं की अधीनता का आधार है
2) कट्टरपंथी नारीवाद	2) पारंपरिक मान्यताएँ और कानूनी बाधाएं महिलाओं की धीनता का आधार है
3) मार्क्सवादी नारीवाद	3) पितृसत्ता और पूंजीवाद महिलाओं की अधीनता का आधार है
4) समाजवादी नारीवाद	4) पितृसत्ता महिलाओं की अधीनता का आधार है।

ख) कट्टरपंथी नारीवाद का महिलाओं के उत्पीड़न की परस्पर संवादात्मक प्रणाली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें?

.....

.....

.....

.....

7.7 उत्तर आधुनिक और तीसरे दौर का नारीवाद

नारीवाद की शुरुआती दौर की आलोचना केवल उच्च वर्ग की श्वेत महिलाओं के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए की जाती रही है। इक्कीसवीं सदी की शुरुआत का यह नारीवाद कुछ मायनों में पहले के नारीवाद से अलग है, फिर भी यह अन्य तरीकों से पहले के नारीवाद से अवगत कराता है। उत्तर-आधुनिक नारीवाद ने आत्मज्ञान की मान्यताओं की आलोचना की और दावा किया कि तर्कसंगतता सार्वभौमिक सत्य को प्राप्त कर सकती है। उत्तर-आधुनिक और उत्तर-संरचनावादी नारीवादी मनोविश्लेषकों जैसे जैक्स लैकैन, अस्तित्ववादी जैसे सिमोन दा बोउआर, विखंडनवादी जैसे जैक देरीदा, और उत्तर-संरचनावादी जैसे मिशेल फूकॉ से प्रभावित हैं। हेलेन सिक्सस जैक दरीदा से प्रभावित थीं। जूडिथ बटलर अपने विचारों में मिषेल फौकॉ से प्रभावित थीं।

7.7.1 हेलेन सिक्सस

हेलेन सिक्सस जैसे उत्तर-संरचनावादी जैक देरीदा की भिन्नता की अवधारणा से प्रभावित थे (फ्रांसीसी शब्द को अंतर के रूप में लिखा गया था)। सिक्सस के अनुसार, पुल्लिंग शब्द का अर्थ स्त्रीलिंग शब्द के संबंध में और उसके विपरीत लिया जाता है। हेलेन सिक्सस आलोचना करते हैं कि पुरुषों द्वारा लेखन और विचार ध्रुवीय श्रेणियों में विभाजित किया गया है जिसमें पुरुष विचार और लेखन को स्त्री पर विशेषाधिकार प्राप्त है (टोंग 2009: 275)।

सिक्सस ने नारीवादी लेखकों को ऐसे लेखों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जिनमें बहुलताओं और संभावनाओं पर केंद्रित हो जो उन लेखनों से विचलन होगा जो उस तर्क पर केंद्रित थे जिसने दुनिया को विपक्षी श्रेणियों के संदर्भ में देखा जिसमें एक वर्ग (पुरुष) दूसरे वर्ग (महिला) पर हावी होता है। तीसरे दौर के नारीवादियों ने नारीवादी आंदोलन के भीतर ही दूसरी दौर के नारीवाद की व्यापक आलोचना की।

7.7.2 जूडिथ बटलर

'जेंडर ट्रबल' में जूडिथ बटलर लिंग और लैंगिक श्रेणियों के एक 'विखंडनवाद' पर विचार प्रस्तुत करतीं हैं। उन्होंने कहा कि लैंगिक की तरह ही, एक व्यक्ति के लिंग का भी निर्माण किया जा सकता है अतः शरीर में पूर्व निर्धारित लैंगिक नहीं होते। समाज में इतरलैंगिकता का संस्थानीकरण इस बात का संकेत देता है कि लिंग और लैंगिक अपनी प्रकृति में स्थिति के अनुसार प्रदर्शन करते हैं। पुरुषों और महिलाओं को स्वीकारे जाने के लिए पुरुषों और महिलाओं की तरह ही व्यवहार करना होगा (टोंग 2009: 281)। वह सिमोन दा बोउआर से सहमत हैं कि एक स्त्री, स्त्री के रूप में जन्म नहीं लेती लेकिन वह एक स्त्री बन जाती है क्योंकि लिंग समाज द्वारा निर्धारित किया जाता है। व्यक्तियों को कथानक द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो समाज द्वारा लिंग या जेंडर के विषय में बनाया जाता है और व्यक्तियों के पास इसका कोई अन्य विकल्प नहीं है। बटलर के अनुसार लिंग जेंडर से अलग नहीं है अपितु यह सांस्कृतिक रूप से निर्मित है। मानव शरीरों को उनके जेंडर के माध्यम से चिंहित किया जाता है। शरीरों को लैंगिकता के माध्यम से दर्शाया जाता है। "एक बच्चे के जन्म के समय यह कहना कि एक लड़की ने जन्म लिया है एक बच्चे को लड़की के अस्तित्व में लाता है, जैसा कि बटलर कहतीं हैं यह प्रक्रिया एक लड़की को लड़की बनाने को अंजाम देती है" (जैक्सन और स्कॉट 2002: 19)। अतः प्रदर्शनकरिता दृश्टान्त है क्योंकि यह पारंपरिक प्रथाओं, मानदंडों और परम्पराओं पर आधारित है। वे कहती है कि यह मुष्किल है कि हम अपने जीवनकाल में खुद के बारे में लिंग, जेंडर और लैंगिकता से परे सोचें, जिसके द्वारा समाज हमें परिभाषित करता है।

इसलिए, तीसरे दौर के नारीवादी विविधता और परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। तीसरे चरण के नारीवादीयों के लिए चीजें किस तरह से हैं यह भिन्नता ही है (टोंग 2009: 271)। वे संघर्ष, विरोधाभास और अंतर्विरोध के लिए तैयार हैं। तीसरे चरण के नारीवाद ने नारीवादी विचारों की आलोचना की जिसने महिलाओं के बीच भेदों को कम आँका।

बोध प्रश्न 5

क) उत्तर-आधुनिक और तीसरे दौर के नारीवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

7.8 बहुसांस्कृतिक और उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद

बहुसांस्कृतिक नारीवादी महिलाओं के बीच भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उत्तर-औपनिवेशिक या वैश्विक नारीवादी इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि दक्षिणी विकासशील देशों में महिलाओं का जीवन उत्तरी विकसित दुनिया की महिलाओं के जीवन

से किस प्रकार भिन्न है। ऐसा इसलिए है क्योंकि महिलाएं एकसमान नहीं हैं और उनके अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। उदाहरण के तौर पर भारतीय नारीवाद को पश्चिमी नारीवाद से अपने संबंधों में स्वयं को निरंतर परिभाषित और विभेदित करना पड़ता है। भारतीय महिलाएं खुद को नारीवादी भले ही ना कहें, लेकिन महिलाओं के लिए नीतियों को लाने में शामिल हो सकती हैं। भारत में नारीवाद पर किसी भी प्रकार की चर्चा को पश्चिमी नारीवाद का सामना करना पड़ता है क्योंकि उपनिवेषवाद के युग के दौरान समाज सुधारकों, राष्ट्रवादियों को समाजवादीयों द्वारा अवगत कराया जाता था, उदारवादी और नारीवादी विचारों को पश्चिम द्वारा व्याख्यायित किया जाता था। हालाँकि भारत में अपनी स्वदेशी जड़ों की खोज के साथ साथ नारीवाद पर ऐतिहासिक लेखन के स्व-चेतन की आवश्यकता है (चौधरी 2004:xiii)। यह प्रयास भारतीय राष्ट्रवाद द्वारा परिभाषित नहीं किए जाने वाले नारीवादी आंदोलनों के अतीत में झांकना है और भारतीय महिलाओं को भारतीय राष्ट्र के साथ मिलाना नहीं चाहिए। पश्चिमी नारीवादीयों ने माना कि पितृसत्ता की संरचनाएं महिलाओं पर अत्याचार करती हैं और यह लिंग जेंडर प्रणाली के माध्यम से समझाया जा सकता है। भारत में जाति, वर्ग, जनजाति और समुदाय के रूप में वर्चस्व की विभिन्न अन्य संरचनाओं के साथ पितृसत्ता आज भी काम कर रही है। साथ ही पितृसत्ता की अवधारणा का भारतीय संदर्भ में अपना ही रास्ता है।

7.9 सारांश

इस इकाई में हमने सीखा कि नारीवाद हमेशा से अस्तित्व में है लेकिन संगठित नारीवाद 17वीं शताब्दी के आसपास इंग्लैंड में उभरा। हमने उदारवादी, कट्टरपंथी, मार्क्सवादी, समाजवादी, उत्तर-आधुनिक, तीसरे दौर के नारीवाद, बहुसांस्कृतिक और उत्तर-ओपनिवेशिक नारीवाद जैसे विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों के केंद्रीय विचारों के बारे में चर्चा की। हमने नारीवादी दृष्टिकोण की विविधता के बारे में और समाज में बदलाव के साथ नारीवादियों की माँगों में किस प्रकार बदलाव आया इस बारे में समझा। उदारवादी नारीवादीयों ने पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों और लाभों के लिए निरंतर आवाज़ उठाई। कट्टरपंथी नारीवादीयों का मानना है कि पितृसत्ता महिलाओं के उत्पीड़न का आधार है और जेंडर जो कि लिंग संबंधी भूमिकाओं पर आधारित है को समाप्त किया जाना चाहिए। मार्क्सवादी नारीवादियों का मानना है कि पूंजीवाद और पितृसत्ता महिलाओं के उत्पीड़न का आधार है और मांग की कि समाज में गृहकार्य को महत्व दिया जाना चाहिए। समाजवादी नारीवादीयों का मानना है कि पितृसत्ता और पूंजीवाद दोनों को समाप्त किया जाना चाहिए। उत्तर-आधुनिक और तीसरे दौर के नारीवादियों का मानना है कि समाज में बहुलता और संभावनाएँ हो सकती हैं और पुरुष प्रधानता के साथ विशमलैंगिक समाज महिलाओं के उत्पीड़न का एक स्रोत है। बहुसांस्कृतिक और उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद उनकी स्थितियों के अनुसार महिलाओं के बीच दृष्टिकोण में अंतर पर विश्वास करता है।

7.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उदारवादी नारीवाद के अनुसार महिलाओं की अधीनता का आधार कुछ सामाजिक मान्यताओं, दृष्टिकोणों और रीति-रिवाजों के कारण है। महिलाओं द्वारा कानूनी अड़चनों का सामना किया जाना भी महिलाओं की अधीनता का एक और कारण है। समाज में कुछ धारणाएँ हैं जो महिलाओं को असमर्थ मानती हैं। पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार और अवसर नहीं प्राप्त हैं जबकि पुरुष और महिलाएं समान रूप से तर्कसंगत हैं।

2) रिक्त स्थान भरो

क) शिक्षा

ख) मताधिकार

ग) द फेमिनिन मिस्टिक

बोध प्रश्न 2

क) कट्टरपंथी नारीवाद उदारवादी नारीवाद जैसी व्यवस्था में सुधार नहीं करना चाहता था, लेकिन इसे क्रांतिकारी रूप देना चाहता था। कट्टरपंथी नारीवादियों का मानना था कि महिलाओं के उत्पीड़न का स्रोत सामाजिक अभिवृत्ति नहीं है, अपितु पितृसत्ता महिलाओं के उत्पीड़न का स्रोत है। कट्टरपंथी नारीवादियों के अनुसार एक समूह के रूप में पुरुष महिलाओं पर हावी हैं और उन्होंने चेतना अभिवृद्धि का आह्वान किया। उदारवादी नारीवादियों के विपरीत, उन्होंने केवल कानूनी और राजनीतिक संरचनाओं के सुधार की मांग नहीं की, अपितु उनका मानना है कि पितृसत्ता को समाप्त किया जाना चाहिए।

ख) शुलिमिथ फायरस्टोन ने 'द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स' किताब लिखी। 'उन्होंने कहा कि लिंग के आधार पर जेंडर में भेद हमारे जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त हैं, लेकिन हम उन्हें पहचान नहीं पाते हैं। उनका विचार था कि महिलाओं को एक वर्ग के रूप में उनके लिंग के कारण भेदभाव किया जाता है। वह मानती हैं कि लड़कियों में स्त्रीत्व और लड़कों में पुरुषत्व को पुरुष प्रधान समाज में माताओं की तुलना में पिता की अधिक षक्ति के कारण समझाया जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

क) मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार गृहकार्य के माध्यम से महिलाओं का योगदान समाज में गैर-मान्यता प्राप्त है और उन्हें समाज में द्वितीय दर्जे के रूप में अवक्रमित कर दिया जाता है। मार्गरेट बेन्स्टन के अनुसार महिलाओं को समाज में सरल उपयोग मूल्यों के उत्पादन के रूप में देखा जाता है। वह मानती हैं कि गृहकार्य को समाज में उत्पादक और महत्वपूर्ण बनाया जाना चाहिए। दूसरी ओर, मारिया डेला कोस्टा और सेल्मा जेम्स ने तर्क दिया कि महिलाओं के लिए एक विकल्प यह भी हो सकता है कि वे घर पर ही रहें और घर में किए जाने वाले उत्पादक काम के लिए मजदूरी की माँग करें।

ख) 1) उत्पादक

2) निजी संपत्ति

3) पूंजीपति

बोध प्रश्न 4

क) 1) (2)

2) (4)

3) (1)

4) (3)

ख) महिलाओं के उत्पीड़न के परस्पर संवादात्मक प्रणाली के स्पष्टीकरण के अनुसार पूंजीवाद और पितृसत्ता दोनों महिलाओं पर अत्याचार करने के लिए एक साथ काम करते हैं। हेदी हार्टमैन का मानना है कि पितृसत्ता और पूंजीवाद, पूंजीवादी पितृसत्ता नामक एक ही जानवर के दो षीष हैं। उनका मानना हैं कि श्रम का लैंगिक विभाजन महिलाओं पर अत्याचार करता है और षास्त्रीय मार्क्सवाद अपने आप में लैंगिक अंधापन है।

बोध प्रश्न 5

क) सिक्सस और जूडिथ बटलर जैसे तीसरे चरण के नारीवादियों ने महिलाओं की अधीनता की एकात्मक परिभाषा प्रदान करने के बजाय 'अंतर' पर ध्यान केंद्रित किया। वे संघर्ष, विरोधाभास और आत्म-विरोधाभास के लिए तैयार हैं। तीसरे चरण के नारीवाद ने नारीवादी विचारों की आलोचना की जिसने महिलाओं के बीच भिन्नता को कम आँका। उन्होंने सार्वभौमिक सत्य को प्राप्त करने की क्षमता के प्रबुद्ध विश्वासों की आलोचना की।

7.11 संदर्भ

चौधरी, एम. (सं.). (2004). फैमिनिज़म इन इंडिया. नई दिल्लीः काली फॉर वुमैन।

जैक्सन, एस. और सुई स्कोट. (2002). पृष्ठ 1-26. इंट्रोडकशन. इनःस्टीवी स्कोट एंड सुई स्कोट, (सं.), जेंडरः ए सोसिओलोजिकल रीडर. लंडन और न्यू यॉर्कः रूटलेज।

जेग्गार, एलिसन. (1983). फैमिनिस्ट पोलिटिक्स एंड ह्यूमन नेचर. ब्रिगटोनः दा हार्वेस्टर प्रेस।

कचुक बीट्राइस. (1995). पृष्ठ. 169-193. फैमिनिस्ट सोशल थिओरीज़ः थीम एंड वेरिएशनस. सोसिओलोजिकल बुलेटेंन, 44(2),

टोंग, रोज़मैरी. (2009). फैमिनिस्ट थोटः ए मोर कोम्प्रिहेनसिव इंट्रोडकशन. कोलोराडोः वेस्टव्यू प्रेस।

वाल्बी, एस. (1990). थेओराइज़िग पेट्रीआर्की. यू केः बासिल ब्लैकवैल।